(14)

उन्नति का यथार्थ

आप कर रहे मित्रवर, किस उन्नति की बात।
बढ़ते जिसके साथ हैं, स्वार्थ लोभ प्रतिघात।। 1 ।।

जिससे हो जाता मनुज, बहु कामना प्रक्षिप्त।
चिंतित बहुलायासरत, आशावान अतृप्त।। 2 ।।

सकलोद्यम प्रेरक बने, अर्जन संग्रह भोग।
भाव जगत दूषणकरी यह उन्नति भव रोग।। 3 ।।

यद्यपि संग्रह में सफल, वार्ता, कर्म प्रवीण।
पर क्या उसका मूल्य है, जो होना है क्षीण।। 4 ।।

नाशवान फल प्रदाता, नर के अध्यवसाय।
वही कुशल अविनाशिता, का जो करे उपाय।। 5 ।।

उस जागृति का हो उदय, प्रकटित हो उद्देश्य।
स्वामी अब बनकर रहें, बहुत रहे मन प्रेष्य।। 6 ।।

नहीं प्रगति कुछ दौड़ में, प्रतिहिंसक है होड़।
वही परम विश्रांति में, जो लेता मुख मोड़।। 7 ।।

भ्राम्यमान बहु परिधि पर, अस्थिर और प्रकीर्ण।
भाग्यवान आ केन्द्र पर, करते व्यथा विशीर्ण।। 8 ।।

सविता घरें समत्व को, शुभद्युति हों निशिनाथ।
सर्व प्राणधर हितनिरत, अनल अनिल के साथ।। 9 ।।

निर्मल वसुयुत हो पुनः, यह वसुमती यथार्थ ।
वैठ प्रकृति की क्रोड, में नर हो आशु कृतार्थ।। 11 ।।

हर हर लें दूषण सकल, अविकल हो हर क्षेत्र।
निर्विष हो अंतर्जगत, फिर हों सदय त्रिनेत्र।। 12 ।।

नर्तन नित्य निसर्ग का, देखें रूक चुपचाप।
दर्शक बनना मुक्ति है, कर्तापन अभिशाप । । 13 ।।

शिव कुमार मिश्र